ĀŚĀDHĀ PŪRNĪMĀ

Dharma Chakra Pravartan Divas

News Articles Published By Indian Electronic Media

scan for website @ibeworldOrg ibe.563 ibeworld.org
The International Buddhist Confederation (IBC) under the aegis of Ministry of Culture, Govt. of India organised the Asadha Purnima Dhamma Chakra Pravartan Divas celebration on 03rd July 2023 at National Museum.

The Chief Guest at this event was Ms. Meenakshi Lekhi, Minister of State for Culture, Govt. of India. The Guest of honour was His Holiness 12th Chamgon Kenting Tai situpa Rinpoche.

On the Occasion of Asadha Purnima, the President of India, Smt. Droupadi Murmu, called upon the youth to draw inspiration from the teachings of Buddha, empowering themselves to make significant contributions toward building a peaceful society, nation, and world.

In a recorded message during the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations on Asadha Purnima, the President highlighted the importance of following Lord Buddha's three teachings: Sheel, Sadhachar, and Pragya. By embracing these teachings, the younger generation can empower themselves and create a positive impact on society.

"On Asadha Purnima, we not only honor the Dhamma of Lord Buddha, which is an integral part of our ancient cultural heritage, but we also recognize its relevance in our daily lives," stated the President. She emphasized the significance of studying and comprehending Lord Buddha’s first sermon delivered in the sacred land of Sarnath to gain a deep understanding of Buddha Dhamma.

Addressing the celebrations, the President reflected on how Lord Buddha planted the seeds of the middle path of the Dhamma through his first sermon on Asadha Purnima. On this auspicious day, it is essential for us to internalize the teachings of Lord Buddha and incorporate them into our thoughts and actions.
Smt. Meenakshi Lekhi, Minister of State for Culture and External Affairs, delivered a special address, sharing insights on the journey of a lay person to attain the level of a Bodhisattva. "Although our values connect us, we are individually responsible for our actions. The right actions can shape our destiny," she explained. Minister Lekhi emphasized the importance of leading a simple and sustainable life, guided by consciousness, mindfulness, and right livelihood, which aligns us with the path of Dhamma.

"Covid-19 has reminded us of the value of life and detached us from material and physical existence. In a way, it has led us toward higher levels of consciousness," she added. The Minister stressed that as time is limited on this planet, every individual should act according to their consciousness, contributing to the strength of the community.

The event was attended by members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi.

During his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima, His Holiness The 12th Chamgon Kenting Tai Situpa said, "We celebrate the first teachings of Buddha, which impart the deepest common sense: to overcome suffering and strive for peace, harmony, and compassion."

On the occasion, a short film on the upcoming project- India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) was shown and the project details explained by the Director General, IBC. Representatives of the companies which are likely to undertake the project were present along with the contractors for the project. Members of the Lumbini Development Trust and Venerable Metteyya Sakyaputta, Vice Chairman of the Lumbini Development Trust, were present during the ceremony.
It is worth noting that on 25\textsuperscript{th} March 2022, an agreement was reached between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC. The 'Shilanyas' ceremony and the foundation stone laying of IICBCH took place on May 16, 2022, with the presence of Prime Minister of India, Shri Narendra Modi, and the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba.
भारत की राष्ट्रपति
श्रीमती द्रौपदी मुर्तु
का
आषाढ़ पूर्णिमा धर्म चक्र प्रवर्तन दिवस के लिए संदेश

नई दिल्ली, 3 जुलाई, 2023

सर्वप्रथम आप सभी को धर्म चक्र प्रवर्तन दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

1. अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ और केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय को इस पावन आषाढ़ पूर्णिमा दिवस का आयोजन करने के लिए, मैं बहुत-बहुत बधाई देती हूँ। बुद्ध की शिक्षा को प्रकाशित और प्रसारित करने में IBC सराहनीय भूमिका निभा रहा है।

2. हम सब जानते हैं कि भारतीय परंपरा में पूर्णिमा का एक विशेष महत्व होता है। आज पवित्र आषाढ़ पूर्णिमा का दिन है। लगभग 2600 वर्ष पूर्व, बोधगया में देशाखंड पूर्णिमा के दिन ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त भगवान बुद्ध, सारनाथ की पावन भूमि पर पठारे और अपने प्रथम पाँच शिष्यों को धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र का उपदेश दिया।

3. बौद्ध परंपरा के अनुसार आषाढ़ पूर्णिमा का यह दिन इसलिए भी अत्यंत पवित्र है कि इसी दिन सिद्धार्थ गौतम ने अपनी माता महामाया के गर्भ में प्रवेश किया था।

4. आषाढ़ पूर्णिमा के दिन हम भगवान बुद्ध के धर्म से परिचित हुए, जो हमारी संस्कृति की निरंतर चली आ रही परंपरा के साथ-साथ हमारे दैनिक जीवन का भाग भी है। इस पवित्र धर्म को जजने के लिए हमें शाक्तिमूति बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिये गए प्रथम उपदेश को जानना और समझना चाहिए।
5. आषाढ़ पूर्णिमा के दिन भगवान बुद्ध ने अपने सर्वप्रथम उपदेश के माध्यम से मध्यम मार्ग को ‘धर्म’ के बीज रूप में आरोपित किया। इस पवित्र दिन, ऐसे समारोहों के आयोजन का उद्देश्य यही है कि भगवान बुद्ध के उपदेशों को हम अपने आचरण तथा विचार में समयक रूप से धारण करें।

6. आज के युवा वर्ग को भगवान बुद्ध के उपदेशों से सीखने की आवश्यकता है। बुद्ध द्वारा बताई आत्मविश्वास शिक्षा – शील, सदाचार तथा प्रज्ञा का अनुसरण कर, युवा पीढ़ी अपना उत्साह कर सकती है तथा एक शांतिपूर्ण समाज, राष्ट्र और विश्व का निर्माण करने में सहयोग दे सकती है।

7. आज, आज के धर्म चक्र प्रवर्तन दिवस के पावन अवसर पर हम भगवान बुद्ध के धर्म को अपने मन और कर्म में ढालने का संकल्प लें।

सबका कल्याण हो।

भव्वृत्त सब्ब मङ्क्लांम्!
लुम्बिनी में विश्व स्तरीय बौद्ध केंद्र के निर्माण के लिए भारत और नेपाल में समझौता

Updated: 9 hours ago
Published: 9 hours ago

'आषाढ़ पूर्णिमा' के शुभ अवसर पर सोमवार को विदेश और संस्कृति राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी की उपस्थिति में, अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) ने एसीसी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड-गोरखा को अनुबंध का प्रमाण पत्र दिया गया। पढ़ें पूरी खबर...

नई दिल्ली: 'आषाढ़ पूर्णिमा' के शुभ अवसर पर, विदेश और संस्कृति राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी की उपस्थिति में, अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) ने एसीसी को अनुबंध का प्रमाण पत्र दिया. नेपाल में भगवान बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी के मठ क्षेत्र में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर फॉर बौद्ध कल्चर एंड हेरिटेज (IICBC) के निर्माण के लिए इंडिया प्राइवेट लिमिटेड-
Delighted to take part in the Asadha Purnima Dharma Chakra Pravartan Divas celebrations org by @MinOfCultureGoI & International Buddhist Confederation at National Museum today.

The day marks Lord Buddha’s first sermon after attaining enlightenment in which he gave the Four Noble... pic.twitter.com/VdyjH8NnbT
— Meenakashi Lekhi (@M_Lekhi) July 3, 2023

आषाढ़ पूर्णिमा के पवित्र अवसर पर संस्कृति मंत्रालय और अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघने 'धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस' को उत्साहपूर्वक मनाया। ज्ञान के प्रकाशस्तंभ के रूप में मनाए जाने वाले इस कार्यक्रम पर माननीय राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्त्य ने वीडियो संदेश दिया। बता दें कि कला परियोजना, भारत अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति और विरासत केंद्र (IICBC), जिसे अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (IBC), नई दिल्ली द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है, जल्द ही भगवान बुद्ध के जन्मस्थल लुम्बिनी के मठ क्षेत्र में शुरू होगी। इस परियोजना के 2024 तक पूरा होने की उम्मीद है।

आषाढ़ पूर्णिमा के पवित्र अवसर पर संस्कृति मंत्रालय और @IbcWorldOrg ने 'धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस' को उत्साहपूर्वक मनाया।

ज्ञान के प्रकाशस्तंभ के रूप में मनाए जाने वाले इस कार्यक्रम पर माननीय राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्त्य ने वीडियो संदेश दिया।

#CultureUnitesAll #AmritMahotsav pic.twitter.com/TzUvZkSgF7

— Ministry of Culture (@MinOfCultureGoI) July 3, 2023

बता दें कि इससे पहले 25 मार्च, 2022 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल के तत्कालीन प्रधान मंत्री शेर बहादुर देउबा के साथ 'शिलान्यास' समारोह में हिस्सा लिया था। 16 मई, 2022 को साइट पर IICBCH की आधारशिला रखी गई थी। लुम्बिनी में चुना गया यह स्थल न केवल एक तीर्थ स्थल है, बल्कि यूनेस्को की विश्व धरोहर परिसर में भी वर्गीकृत है। नया केंद्र एक विश्व स्तरीय सुविधा प्रदान करेगा जो युनेस्को भर से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को प्राप्त करेगा.

ये भी पढ़ें

भारतीय मार्ग विश्व की प्रगति और मानवता को बढाने का रास्ता है: मीनाक्षी लेखी

RPL certificate: LG वीके सक्सेना ने 1600 प्रशिक्षुओं को RPL प्रमाण पत्र किया वितरित
श्रीलंका के प्रतिनिधिमंडल ने बौद्ध विरासत को दर्शाने वाली दो पेंटिंग मीनाक्षी लेखी को सौंपी

वे IIICBCH से बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक पहलुओं का सार ग्रहण करने में सक्षम होंगे. यह ध्यान देने योग्य है कि यह आधुनिक इमारत ऊर्जा, पानी और अपशिष्ट प्रबंधन के मामले में अनुरूप है. इसमें प्रारंभिक कक्ष, एक प्रदर्शनी हॉल, एक कैफेटेरिया और अन्य सुविधाएं भी होंगी.
India, Nepal exchange contract for construction of world-class Buddhist Centre in Lumbini

Updated: Jul 3, 2023, 9:51 PM
Published: Jul 3, 2023, 9:45 PM
contract was presented by the International Buddhist Confederation (IBC) to ACC India Private Limited-Gorkha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

India, Nepal exchange contract for construction of world-class Buddhist Centre in Lumbini

New Delhi: On the auspicious occasion of 'Ashadha Purnima' on Monday, in the presence of Minister of State for External Affairs and Culture Meenakshi Lekhi, a certificate of the award of the contract was presented by the International Buddhist Confederation (IBC) to ACC India Private Limited-Gorkha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal. The project is an initiative undertaken by Indo-Nepal joint venture companies.

To promote the core values of the Dhamma as preached by Gautama Buddha and to unravel the mind’s true nature through rigorous practice of learning, reflection and meditation and to experience the feeling of oneness with Lord Buddha and peace within, the construction of the state-of-the-art project, the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH), which is being executed by the International Buddhist Confederation (IBC), New Delhi, will begin soon at the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha. The project is expected to be completed by 2024 at the earliest.
It may be recalled following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi, along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba, performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on May 16, 2022. This chosen site at Lumbini is not only a pilgrimage site, but also categorised within the UNESCO World Heritage Complex. Thus, this special status provides an opportunity to create a sustainable environment through architecture.

The centre has been conceived as a modern architectural marvel with a unique design that symbolises the essence and meaning of the lotus flower, one of Buddhism’s most popular symbols of enlightenment and is considered important in Buddhist traditions. The centre will provide a world-class facility that will receive pilgrims and tourists from all over the world. They will be able to absorb the essence of the spiritual aspects of Buddhism from IICBCH. It is worth highlighting that this modern building is compliant in terms of energy, water and waste handling. It will also have prayer halls, an exhibition hall, a cafeteria and other amenities.
President Murmu calls upon youths to learn from Buddha's teachings

ANI | Updated: Jul 04, 2023 02:41 IST

New Delhi [India], July 4 (ANI): President Droupadi Murmu (/topic/president-droupadi-murmu) on Monday called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and
immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society, stated a release from Ministry of Culture.

"On Asadha Purnima, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life," the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day, we absorb the teachings of lord Buddha into our behaviour and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person's journey to attain the level of a Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny." She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.
It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added. As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event organised at the National Museum in New Delhi.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion."

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Meenakashi Lekhi (/topic/meenakashi-lekhi), the contact was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.
Before the handing over of the Contract Award, a film on the "India International Centre for Buddhist Culture and Heritage", IBC's- project in Lumbini was shown.

Asadha Purnima day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Risipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (/topic/dharma-cakra-pravartana-sutra) (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation.

The day is also observed as Guru Purnima (/topic/guru-purnima) by both Buddhists (/topic/buddhists) and Hindus (/topic/hindus) as a day to mark reverence to their Gurus. (ANI)
Nepal, India sign MoU for India's International Buddhism Centre in Lumbini

WION Video Team | Updated: Jul 03, 2023, 11:30 PM IST

Prime Minister Narendra Modi's spiritual visit to Nepal Accord spiritual sentiments in his address where he said the Devotion to Lord Buddha binds the two countries as part of one family the construction of Buddhism Center comes after several countries including the United States and China built centers in Lumbini to promote Buddhists philosophy.
Indian Embassy in association with the International Buddhist Confederation celebrates Asadh Purnima in Kathmandu

03-07-2023 | 6:22 pm

Indian Embassy in association with the International Buddhist Confederation celebrates Asadh Purnima in Kathmandu

The Embassy of India in association with the International Buddhist Confederation celebrated Asadh Purnima in Kathmandu. The event was marked by Minister of Culture of Nepal Sushila Sirpali Thakuri addressing the gathering emphasising on shared Buddhist heritage between India and Nepal. The Secretary of IBC in Nepal mentioned that Buddha's teachings aid in bringing harmony and world peace.
The full Moon day that occurs in the Hindu month Ashadha known as Ashadha Purnima has great significance in the Buddhist and Hindu religions. This is also called Guru Purnima when people seek blessings from their mentors.

Around 2.4 million Buddhist followers of Nepal which is about 8.2 percent of Nepal’s population and around 8.5 million Buddhists living in India, about 0.7% of the total population celebrate Asadh Purnima. The day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples on the full-moon day of Ashadha in present-day Sarnath, India.

Sweta Singh/Kathmandu/03.07.2023
KATHMANDU, July 3: On the auspicious occasion of Asadha Purnima, the Embassy of India, Kathmandu, in association with the International Buddhist Confederation (IBC) held joint celebrations at the Embassy’s Swami Vivekananda Culture Center in Kathmandu on Monday.

According to a statement issued by the embassy, the celebrations were graced by Minister of State for Culture, Civil Aviation & Tourism, Government of Nepal, Sushila Sirpali Thakuri. Representatives from various Buddhist sects and monasteries in Nepal, as well as office-bearers from the Lumbini Development Trust participated in the event. Secretary of International Buddhist Confederation (IBC), Khenpo Chimed represented IBC at the event.

The celebrations witnessed ceremonial prayers by Mahayana Sangha and Theravada Sangha, which was followed by dedication of prayers of four Buddhist Sutras. Minister of State for Culture, Civil Aviation & Tourism Thakuri stated that Buddhism was one of the bonds which have connected India and Nepal for centuries and expressed confidence that the civilization ties between India and Nepal will be strengthened in modern times by the construction of Buddhist as well as other religious circuits.

In the event, video highlights of the design and features of the upcoming India International Center for Buddhist Culture and Heritage in the Lumbini Monastic Zone was displayed at the event.
Moreover, an exhibition showcasing various Buddhist sites of religious importance in Nepal and India was also displayed on the occasion.
Prez calls upon youth to learn from teachings of Buddha to empower themselves

PTI 04 July, 2023 12:00 am IST

New Delhi, Jul 3 (PTI) President Droupadi Murmu called upon the youth to learn from the teachings of Lord Buddha to empower themselves and bring a positive impact in society.

A recorded video message of her was screened during an event held at the National Museum here on Monday to mark “Ashadha Purnima”, the second most sacred day for Buddhists.

By following the three teachings of Lord Buddha — Sheel, Sadhachar and Pragya — the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Murmu was quoted as saying in a statement issued by the Culture Ministry.

“On ‘Asadha Purnima’, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage, but it is also an essential feature of
our daily life,” she said, adding that to know about Buddha Dhamma “we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath”.

The President called upon the youth to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The event was organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture.

Murmu recalled that on “Asadha Purnima”, Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. “It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behaviour and thought,” she said.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakshi Lekhi, in her address described a lay person’s journey to attain the level of Bodhisattva.

“Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny,” she said.

She went on to explain that living simply and in sustainable manner, “in our daily life”, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, “we are already on the right path of Dhamma”.

It was COVID-19 that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent masters, cholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of ‘Asadha Purnima’ said, “We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have overcome it is important to experience and realise the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.” In the presence of Lekhi, contract was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by IBC to ACC Gorakha for
the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal, the statement said.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on May 16, 2022, it said Before the handing over of the contract award, a film on the ‘India International Centre for Buddhist Culture and Heritage’, project in Lumbini was screened.

It was at Sarnath that Buddha gave his first sermon and set the wheel of dharma in motion. The auspicious day of Ashadha Purnima which falls on the full moon day of the month of Ashadha as per Indian lunar calendar is also known as Esala Poya in Sri Lanka and Asanha Bucha in Thailand.

The day marks Buddha’s first teaching after attaining Enlightenment, to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at ‘Deer Park’, in the present day Sarnath, near Varanasi, it said.

The rainy season retreat (Varsha Vassa) for monks and nuns, also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their gurus, the statement said. PTI KND CK

This report is auto-generated from PTI news service. ThePrint holds no responsibility for its content.

Subscribe to our channels on YouTube & Telegram

Support Our Journalism

India needs fair, non-hyphenated and questioning journalism, packed with on-ground reporting. ThePrint – with exceptional reporters, columnists and editors – is doing just that.

Sustaining this needs support from wonderful readers like you.

Whether you live in India or overseas, you can take a paid subscription by clicking here.
Buddha’s Teachings can Empower the Youth: President of India, Smt. Droupadi Murmu

Dharma Chakra Parivartan Divas Celebrations by Culture Ministry and IBC on Ashadha Purnima organised at National Museum, New Delhi

Posted On: 03 JUL 2023 7:59PM by PIB Delhi

Today, the President of India, Smt. Droupadi Murmu, called upon the youth to draw inspiration from the teachings of Buddha, empowering themselves to make significant contributions toward building a peaceful society, nation, and world.

In a recorded message during the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations on Ashadha Purnima, the President highlighted the importance of following Lord Buddha's three teachings: Sheel, Sadhachar, and Pragya. By embracing these teachings, the younger generation can empower themselves and create a positive impact on society.

"On Ashadha Purnima, we not only honor the Dhamma of Lord Buddha, which is an integral part of our ancient cultural heritage, but we also recognize its relevance in our daily lives," stated the President. She emphasized the significance of studying and comprehending Lord Buddha's first sermon delivered in the sacred land of Sarnath to gain a deep understanding of Buddha Dhamma.
Addressing the celebrations organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, the President reflected on how Lord Buddha planted the seeds of the middle path of the Dhamma through his first sermon on Asadha Purnima. On this auspicious day, it is essential for us to internalize the teachings of Lord Buddha and incorporate them into our thoughts and actions.

The official programme was organised at the National Museum, New Delhi today.

Smt. Meenakashi Lekhi, Minister of State for Culture and External Affairs, delivered a special address, sharing insights on the journey of a lay person to attain the level of a Bodhisattva. "Although our values connect us, we are individually responsible for our actions. The right actions can shape our destiny," she explained. Smt. Lekhi emphasized the importance of leading a simple and sustainable life, guided by consciousness, mindfulness, and right livelihood, which aligns us with the path of Dhamma.
"Covid-19 has reminded us of the value of life and detached us from material and physical existence. In a way, it has led us toward higher levels of consciousness," she added. The Minister stressed that as time is limited on this planet, every individual should act according to their consciousness, contributing to the strength of the community.

The event was attended by members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi.

During his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima, His Holiness The 12th Chamgon Kenting Tai Situpa said, "We celebrate the first teachings of Buddha, which impart the deepest common sense: to overcome suffering and strive for peace, harmony, and compassion."

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Smt. Meenakashi Lekhi, an announcement was made regarding the award of the construction contract for the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini. The International Buddhist Confederation (IBC) presented the Certificate of the 'Award of Contract' to M/S ACC-Gorakha, an Indo-Nepal Joint Venture company. Representatives from both Indian and Nepalese companies, as well as members of the Lumbini Development Trust and Venerable Metteyya Sakyaputta, Vice Chairman of the Lumbini Development Trust, were present during the ceremony.

It is worth noting that on 25th March 2022, an agreement was reached between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC. The 'shilanyas' ceremony and the foundation stone laying of IICBCH took place on May 16, 2022, with the presence of Prime Minister of India, Shri Narendra Modi, and the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba.

Before the Contract Award ceremony, a film showcasing the "India International Centre for Buddhist Culture and Heritage" project in Lumbini, as envisioned by the IBC, was screened.
Ashadha Purnima marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Rishipatana Mrigaday in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka-Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprises the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intense meditation.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.

***

NB/SKT

(Release ID: 1937114)
Buddha’s teachings to empower the youth: President Murmu
The President of India, Smt. Droupadi Murmu today called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three-teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya-the younger generation can empower themselves and bring a positive impact to society.

“On Asadha Purnima we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life,” the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of lord Buddha into our behavior and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Smt. Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person’s journey to attain the level of a Bodhisattva. “Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny.” She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.
Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness The 12th Chamgon Kenting Tai Situpa in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima he said “we celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Lekhi, the contact was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022. Before the handing over of the Contract Award a film on the –“India International Centre for Buddhist Culture and Heritage”, IBC’s- project in Lumbini was shown.

Background on Asadha Purnima
The day marks Buddha’s first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at ‘Deer Park’, Rñipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. They are served during this period by the lay community who also observe Uposatha, i.e., to observe eight precepts and meditate under the guidance of their teachers.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.
By embracing Lord Buddha’s teachings, youngsters can empower themselves: President Droupadi Murmu

The youth of the country should draw inspiration from the teachings of Buddha. By this, they can empower themselves to make significant contributions toward building a peaceful society, nation, and world, said President Droupadi Murmu on Tuesday.

In a recorded message during the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations on the occasion of Ashadha Purnima, the President highlighted the importance of following Lord Buddha’s teaching.

Stress was given on Buddha’s three teachings: Sheel, Sadhachar, and Pragya. By embracing these teachings, the younger generation can empower themselves and create a positive impact on society, the President said.

"On Ashadha Purnima, we not only honor the Dhamma of Lord Buddha, which is an integral part of our ancient cultural heritage, but we also recognize its relevance in our daily lives," stated the President.

The President also emphasised the significance of studying and comprehending Lord Buddha's first sermon delivered in the sacred land of Sarnath to gain a deep understanding of Buddha Dhamma, PIB reported.

Addressing the celebrations organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, the President reflected on how Lord Buddha planted the seeds of the middle path of the Dhamma through his first sermon on Asadha Purnima. On this auspicious day, it is essential for us to internalise the teachings of Lord Buddha and incorporate them into our thoughts and actions.
Teachings of Lord Buddha can help younger generation bring positive impact to society: President Murmu
New Delhi : The President of India, Smt. Droupadi Murmu Tuesday called upon the youth to learn from the teachings of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three-teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation can empower themselves and bring a positive impact to society.

“On Ashadha Purnima we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life,” the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of lord Buddha into our behavior and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Smt. Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person’s journey to attain the level of a Bodhisattva. “Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny.” She went on to explain that living simply and in a sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.
As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima he said “we celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest common sense; suffering is the object that we have to overcome. It is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Lekhi, the contract was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award a film on the –“India International Centre for Buddhist Culture and Heritage”, IBC’s- project in Lumbini was shown.

**Background on Ashadha Purnima**

The day marks Buddha’s first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at ‘Deer Park’, Rishipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka– Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Chakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprises the Four Noble Truths and the Noble Eightfold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. They are served during this period by the lay community who also observe Upasatha, i.e., to observe eight precepts and meditate under the guidance of their teachers.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.
THE WEEK

Updated: July 03, 2023 23:25 IST

New Delhi, Jul 3 (PTI) President Droupadi Murmu called upon the youth to learn from the teachings of Lord Buddha to empower themselves and bring a positive impact in society.

A recorded video message of her was screened during an event held at the National Museum here on Monday to mark "Asadha Purnima", the second most sacred day for Buddhists.

By following the three teachings of Lord Buddha – Sheel, Sadhachar and Pragya – the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Murmu was quoted as saying in a statement issued by the Culture Ministry.

"On 'Asadha Purnima', we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage, but it is also an essential feature of our daily life," she said, adding that to know about Buddha Dhamma "we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath".

The President called upon the youth to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The event was organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture.

Murmu recalled that on "Asadha Purnima", Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. "It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behaviour and thought," she said.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her address described a lay person's journey to attain the level of Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny," she said.

She went on to explain that living simply and in sustainable manner, "in our daily life", following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, "we are already on the right path of Dhamma".

It was COVID-19 that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas,
eminent masters, scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of ‘Asadha Purnima’ said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realise the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion."

In the presence of Lekhi, contract was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by IBC to ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCIH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal, the statement said.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCIH at the site on May 16, 2022, it said.

Before the handing over of the contract award, a film on the 'India International Centre for Buddhist Culture and Heritage', project in Lumbini was screened.

It was at Sarnath that Buddha gave his first sermon and set the wheel of dharma in motion. The auspicious day of Ashadha Purnima which falls on the full moon day of the month of Ashadha as per Indian lunar calendar is also known as Esala Poya in Sri Lanka and Asanha Bucha in Thailand.

The day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment, to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', in the present day Sarnath, near Varanasi, it said.

The rainy season retreat (Varsha Vassa) for monks and nuns, also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their gurus, the statement said.

(This story has not been edited by THE WEEK and is auto-generated from PTI)

**ALSO READ**


[Muzumdar set to become Indian women’s cricket team head coach](https://www.theweek.in/news/sports/2023/07/03/muzumdar-set-to-become-indian-womens-cricket-team-head-coach.html)

President Murmu calls upon youths to learn from Buddha’s teachings

admin    July 4, 2023

NEW DELHI: President Droupadi Murmu on Monday called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society, stated a release from Ministry of Culture.

“On Asadha Purnima, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life,” the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day, we absorb the teachings of lord Buddha into our behaviour and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person’s journey to attain the level of a Bodhisattva.

“Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny.” She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added. As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.
Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event organised at the National Museum in New Delhi.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion."

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Meenakashi Lekhi, the contract was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas‘ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award, a film on the -“India International Centre for Buddhist Culture and Heritage”, IBC’s- project in Lumbini was shown.

Asadha Purnima day marks Buddha’s first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at ‘Deer Park’, Risipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus. (ANI)
President Murmu calls upon youths to learn from teaching of Buddha

by Hemanta Pande

New Delhi | Mon, Jul 03 | 11:14 p.m.

"Buddha’s teachings to empower youth"

New Delhi, July 3: President Droupadi Murmu today called upon the youths to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three-teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society.

"On Asadha Purnima we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life," the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of lord Buddha into our behavior and thought.

Asadha Purnima day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Rishipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus. Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of
Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based participated in the event.
Prez calls upon youth to learn from teachings of Buddha to empower themselves

PTI /pti-stories | New Delhi | Updated: 03-07-2023 23:20 IST | Created: 03-07-2023 23:20 IST

President Droupadi Murmu called upon the youth to learn from the teachings of Lord Buddha to empower themselves and bring a positive impact in society.

A recorded video message of her was screened during an event held at the National Museum here on Monday to mark "Ashadha Purnima", the second most sacred day for Buddhists.

By following the three teachings of Lord Buddha -- Sheel, Sadhachar and Pragya -- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Murmu was quoted as saying in a statement issued by the Culture Ministry.

"On 'Asadha Purnima', we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage, but it is also an essential feature of our daily life," she said, adding that to know about Buddha Dhamma "we should learn and understand the first sermon given by
Shakyamuni on the sacred land of Sarnath”.

The President called upon the youth to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The event was organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture.

Murmur recalled that on his first visit to Nepal, the Buddha planted the seeds of the middle path of the Dhamma. “It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behaviour and thought,” she said.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakshi Lekhi, in her address described a lay person's journey to attain the level of Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny," she said.

She went on to explain that living simply and in a sustainable manner, "in our daily life", following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, "we are already on the right path of Dhamma".

It was COVID-19 that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent masters, cholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of 'Asadha Purnima' said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realise the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion." In the presence of Lekhi, contract was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by IBC to ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal, the statement said.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at
the site on May 16, 2022, it said Before the handing over of the contract award, a film on the 'India International Centre for Buddhist Culture and Heritage', project in Lumbini was screened.

It was at Sarnath that Buddha gave his first sermon and set the wheel of dharma in motion. The auspicious day of Ashadha Purnima which falls on the full moon day of the month of Ashadha as per Indian lunar calendar is also known as Esala Poya in Sri Lanka and Asanha Bucha in Thailand.

The day marks Buddha’s ascension from his earthly life as a prince to an ascetic (pancavargiya) on the full moon day of Ashadha at ‘Deer Park’, in the present day Sarnath, near Varanasi, it said.

The rainy season retreat (Varsha Vassa) for monks and nuns, also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their gurus, the statement said.

(This story has not been edited by Devdiscourse staff and is auto-generated from a syndicated feed.)

Prez calls upon youth to learn from teachings of Buddha to empower themselves

By following the three teachings of Lord Buddha — Sheel, Sadhachar and Pragya — the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Draupadi Murmu said at an event in New Delhi.

by Press Trust of India
July 4, 2023

New Delhi: President Draupadi Murmu called upon the youth to learn from the teachings of Lord Buddha to empower themselves and bring a positive impact in society.

A recorded video message of her was screened during an event held at the National Museum here on Monday to mark "Ashadha Purnima", the second most sacred day for Buddhists.

By following the three teachings of Lord Buddha — Sheel, Sadhachar and Pragya — the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Murmu was quoted as saying in a statement issued by the Culture Ministry.

On the holy occasion the Ashadha Purnima Ministry of Culture and @IbcWorldOrg celebrated the Dhamma Chakra Pravartan Divas which commemorates the first turning of the wheel of Dhamma. (1/4)@CultureUnitesAll #AmritMahotsav #G20India pic.twitter.com/kIq4UdvHUh

— Ministry of Culture (@MinOfCultureGoI) July 3, 2023
“On ‘Asadha Purnima’, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage, but it is also an essential feature of our daily life,” she said, adding that to know about Buddha Dhamma “we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath”.

The President called upon the youth to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The event was organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture.

Murmu recalled that on “Asadha Purnima”, Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. “It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behaviour and thought,” she said.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her address described a lay person’s journey to attain the level of Bodhisattva.

“Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny,” she said.

She went on to explain that living simply and in sustainable manner, “in our daily life”, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, “we are already on the right path of Dhamma”.

It was COVID-19 that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent masters, cholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of ‘Asadha Purnima’ said, “We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realise the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.”

In the presence of Lekhi, contract was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by IBC to ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal, the statement said.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on May 16, 2022, it said.

Before the handing over of the contract award, a film on ‘India International Centre for Buddhist Culture and Heritage’, project in Lumbini was screened.

It was at Sarnath that Buddha gave his first sermon and set the wheel of dharma in motion. The auspicious day of Ashadha Purnima which falls on the full moon day of the month of Ashadha as per Indian lunar calendar is also known as Esala Poya in Sri Lanka and Asanha Bucha in Thailand.

Dear Reader,

Over the past four years, EastMojo revolutionised the coverage of Northeast India through our sharp, impactful, and unbiased coverage. And we are not saying this: you, our readers, say so about us. Thanks to you, we have become Northeast India’s largest, independent, multimedia digital news platform.

Now, we need your help to sustain what you started.

We are fiercely protective of our ‘independent’ status and would like to remain so: it helps us provide quality journalism free from biases and agendas. From travelling to the remotest regions to cover various issues to paying local reporters honest wages to encourage them, we spend our money on where it matters.

Now, we seek your support in remaining truly independent, unbiased, and objective. We want to show the world that it is possible to cover issues that matter to the people without asking for corporate and/or government support. We can do it without them; we cannot do it without you.
Youth should learn from Buddha's teachings to empower themselves: President Murmu
नयी दिल्ली, तीन जुलाई (भाषण) राष्ट्रपति दूर्दीपी मुरमु ने युवाओं से खुद को सशक्त बनाने और समाज में सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए भारतीय बुद्ध की शिक्षाओं से सीख लेने का आह्वान किया।

बीडी के दूसरे सबसे पवित्र दिन ‘आषाढ़ पूर्णिमा’ के अवसर पर सोमवार को यह राष्ट्रीय संस्थालय में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान मुरमु का एक रिकॉर्ड दिया गया जिसमें युवा संस्थानों के संस्थापकों ने युवाओं को हमेशा भगवान का जीवन नहीं सोचने के लिए दी अनुसंधान तथा साहित्य का अस्तित्व बताया।

उन्होंने कहा, “‘आषाढ़ पूर्णिमा’ पर हम भारतीय बुद्ध के ‘धम्म’ से प्रेरित हुए, जो न केवल हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है, बल्कि यह हमारे देश के जीवन का एक अनिवार्य विशेषता भी है।”

मुरमु ने कहा कि बुद्ध के धम्म से वाक्फ की ओर के लिए “हमें शक्तिमूल द्वारा सारांश की पवित्र भूमि पर दिया गए प्रथम उपदेश को जानना और समझना चाहिए।”

कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय के तत्त्वाध्याय में अंतरराष्ट्रीय बीडी परिसंघ (आईबीसी) ने किया था।

संस्कृति और विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने अपने सभोधन में एक सामान्य व्यक्ति का बोधिसत्व के स्तर को प्राप्त करने की यात्रा का वर्णन किया।

उन्होंने कहा, “हम सभी अपने मूलों से जुड़े हुए हैं, फिर भी हम अपने कार्यों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। स्वतंत्रता करने भायों को बदल सकते हैं।”

राष्ट्रपति ने सोमवार को करण्टक के राजमहल में आयोजित एक कार्यक्रम में कमव्याल जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के सदस्यों, विशेषकर महिलाओं को शिक्षा का महत्व भी समझाया।
इस दौरान, उन्होंने विशेष रूप से जेनु कुरुवा और कोररा समुदायों के पीवीटीजी सदस्यों के साथ बातचीत की और उनसे विभिन्न सरकारी पहलों का लाभ उठाने के लिए भी कहा।

राजभवन द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है, “राष्ट्रपति ने पीवीटीजी समुदाय, विशेषकर महिलाओं के लिए शिक्षा के अत्यधिक महत्व पर जोर दिया। उन्होंने समुदाय एवं महिलाओं की आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना सहित विभिन्न पहल का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।”

मुरू ने कर्नाटक में इस समुदाय से डॉक्टरेट की हिड्री हासिल करने वाली पहली महिला से मिलकर खुशी भी व्यक्त की।

भाषा सुरभि पारुल
पारुल
President Murmu calls upon youths to learn from Buddha’s teachings

By ANI | Published: July 04, 2023 2:41 AM

New Delhi [India], July 4: President Droupadi Murmu on Monday called upon the youth to learn from the ...
President Murmu calls upon youths to learn from Buddhas teachings

New Delhi, July 4: President Droupadi Murmu on Monday called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society, stated a release from Ministry of Culture.

"On Asadha Purnima, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha
given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day, we absorb the teachings of lord Buddha into our behaviour and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person's journey to attain the level of a Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny." She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added. As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event organised at the National Museum in New Delhi.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize
On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Meenakashi Lekhi, the contact was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award, a film on the "India International Centre for Buddhist Culture and Heritage", IBC's- project in Lumbini was shown.

Asadha Purnima day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Risipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka-Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.
वूड़ू ने कार्यक्रम में इस समारोह से डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने वाली पहली महिला से मिलकर खुशी भी बताती है।

राष्ट्रपति दौड़ी मूर्ति ने युवाओं से खुद को सशक्त बनाने और समाज में सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए भाग बदल की शिक्षाओं से सीख लेने का आह्वान किया। बूड़ू के दूसरे सबसे पवित्र दिन ‘आया चुल्लिया’ के अवसर पर संगठन को इस राष्ट्रीय संगठन में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान मूर्ति का एक निकाय किया गया वीडियो संदर्भ प्रसारित किया गया। संस्कृति रंजनलय द्वारा जारी एक बयान में राष्ट्रपति मूर्ति के हवाले से कहा गया है कि भारतीय मूर्ति की तीन शिक्षाओं-शील, सत्यसत्व और प्रजा-का पालन करके पुरा पीढ़ी खुद को सशक्त बना सकती है और समाज में सकारात्मक प्रभाव ला सकती है। उन्होंने कहा, “आया चुल्लिया पर हम भारतीय मूर्ति के ‘धम्म’ से परिचित हैं, जो न केवल हमारी प्राथमिक साक्षरता के हिस्सा है, बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन की एक अनिवार्य विशेषता भी है।”

मूर्ति ने कहा कि मूर्ति के धम्म से स्तब्ध होने के लिए “हमें शाक्तिप्रज्ञा द्वारा साराध्य की पवित्र प्रभु के प्रिय हो गए प्रस्तुति प्रदान की जाना और समझना चाहिए।” कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय के तत्वाध्यक्ष अंतरराष्ट्रीय बूड़ू परींतां (आईबीई) के किया था। संस्कृति और विदेश राज नंबर सीनाकार लेख के अभिव्यक्ति की जोर दिया जा सकता है। संस्कृति की जीवन की एक राष्ट्रीय संगठन में आयोजित एक कार्यक्रम में प्राधिकल्य समूहों (पीपीई) के सदस्यों, विशेषकर महिलाओं को शिक्षा के महत्व पर समझाया।

इस दौरान, उन्होंने विशेष रूप से जेनु कुमार और केसरी समाजों के पीपीई बालिकाओं के साथ बातचीत की और उन्हें विभिन्न साक्षरता पहलों का लाभ उठाने के लिए भी कहा, “जिसका द्वारा तीन और जानवर एवं महिलाओं को आवश्यकताओं समझना सहीत विभिन्न पहलों का लाभ उठाने के लिए प्रोस्पेरिटी किया।” मूर्ति ने कहा, “इस समारोह में डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने वाली पहली महिला से मिलकर खुशी भी बताती है।

Disclaimer: प्रमाणपत्री ने इस खबर को संपादित नहीं किया है। यह खबर पीपीई-भाषा की फीड से प्रकाशित की गयी है।
New Delhi, Jul 03, 2023: The President of India, Smt. Droupadi Murmu today called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three-teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society.

“On Asadha Purnima we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life,” the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of lord Buddha into our behavior and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Smt. Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person’s journey to attain the level of a Bodhisattva. “Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny.” She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added. As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event organised at the National Museum in New Delhi today.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima said, “We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.”

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Smt Meenakashi Lekhi, the contact was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022 Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award, a film on the -“India International Centre for Buddhist Culture and Heritage” IBC’s- project in Lumbini was shown.

Asadha Purnima day marks Buddha’s first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at ‘Deer Park’, ?i?ipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also
known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.
INDIA INTERNATIONAL CENTRE
FOR
BUDDHIST CULTURE AND HERITAGE
(IICBCH)
LUMBINI, NEPAL

To promote the core values of the Dharma as preached by Gautama Buddha and in order to unveil the mind's true nature through rigorous practice of learning, reflection, meditation and to experience the feeling of oneness with Lord Buddha and peace within, the construction of a state-of-the-art project, the 'India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH)', being implemented by international Buddhist Confederation (IBC) New Delhi, will begin shortly at the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha.

This chosen site at Lumbini is not only a pilgrimage site but is categorized within the UNESCO World Heritage complex. Thus, this special status provides an opportunity to create sustainable environment through architecture. The centre has been conceived as a modern architectural marvel with a unique design that symbolizes the essence and meaning of the lotus flower – one of Budhhism's most popular symbols of enlightenment and is considered important in the Buddhist traditions.

The facility would have a meditation centre which would be the main activity area as well as the core of the facility. There are arrangements for a library and an interpretation centre besides a board room, and guest rooms.

The centre will provide a world-class facility that will receive pilgrims and tourists from all over the world. They will be able to absorb the essence of the spiritual aspects of Buddhism from IICBCH. It is worth highlighting that this modern building is compliant in terms of energy, water and waste handling. It will also have prayer halls, exhibition hall, cafeteria and other amenities.

The International Buddhist Confederation (IBC) is a Buddhist umbrella body that serves as a common platform for Buddhists worldwide. It currently has a membership comprising more than 300 organizations, both monastic and lay, in 53 countries.

Headquartered in New Delhi, the IBC is the only body of the historic Global Buddhist Congregation held in November 2011 in New Delhi, where in 500 delegates from all over the world, representing the entire Buddhist world resolved to form an umbrella Buddhist world body based in India, the land of Buddha's enlightened awakening and original Buddhist Dharma. The leadership of the IBC constitutes a representative and non-governmental entity of all traditions and countries as President and members of the Supreme Dharma Council.

As part of its motto, "Collective Wisdom, United Voice", the IBC provides a common platform and network of all the Buddhist Dharma worldwide, and it is one of the most significant and global concerns.

Mission:
To gather the collective wisdom of Buddhists around the world to work with a united Buddhist voice to make Buddhism a valuable part of global engagement while working for preserving and promoting Buddhism in our various traditions and vocation.